सन्देश

विभिन्न पर्यावरणीय सेवाओं, वन उत्पादों एवं आजीविका के संसाधन उपलब्ध करवाने के कारण मानव जीवन में वनों व वृक्षों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। पशु–पक्षियों, कीट पतंगों, जल व वायु द्वारा बीजों का विसरण व परागण एवं वन भूमि पर प्राकृतिक रूप से गिरे बीजों के अंकुरण द्वारा वनस्पतियों का विस्तार व प्राकृतिक पुनरोत्पादन होता है। वन क्षेत्रों में बढ़ते जैविक दबाव के कारण प्राकृतिक पुनरोत्पादन में कमी आने से प्राकृतिक पुनरोत्पादन के लिए अनुकूल परिस्थितियां सृजित कर बीज बुआन एवं वृक्षारोपण के माध्यम से कृत्रिम पुनरोत्पादन किया जा रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि प्रदेश में हरियाली लाने हेतु प्रत्येक प्रदेशवासी को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करने के लिए 'वन महोत्सव' के अवसर पर वन एवं वन्य जीव विभाग द्वारा प्रदेश में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

वर्ष 2018–19 में वर्षाकाल में वन विभाग, विभिन्न राजकीय विभागों तथा जन सहभागिता से प्रदेश में व्यापक स्तर पर पौध रोपण किया जाना प्रस्तावित है। पौध रोपण हेतु राजकीय भूमि, ग्राम सभा भूमि, सड़क व नहर पटरी भूमि एवं विद्यालयों व आवासीय कालोनियों की भूमि सहित विभिन्न प्रकार की भूमि चिन्हित की गई है। प्रदेश में हरित आवरण व कृषकों की आय में वृद्धि हेतु महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना के अन्तर्गत निजी खेत में मुख्यमंत्री फलोद्यान योजना, मुख्यमंत्री कृषक वृक्ष धन योजना एवं मुख्यमंत्री सामुदायिक वानिकी योजना प्रारम्भ की गयी है। वृक्षों के प्रति अपनत्व की भावना विकसित करने के लिए 'एक व्यक्ति एक वृक्ष' योजना के अन्तर्गत प्रत्येक प्रदेशवासी को कम से कम एक वृक्ष लगाने हेतु प्रेरित किया जा रहा है। गंगा नदी को स्वच्छ, निर्मल व अविरल बनाने, गंगा तटों को हरा–भरा करने एवं गंगा ग्रामों के समग्र विकास हेतु गंगा हरीतिमा अभियान चलाया जा रहा है।

'वन महोत्सव', वृक्षारोपण कर हमारे द्वारा उपभोग किए जा रहे प्राकृतिक संसाधनों को प्रकृति को वापस लौटाने व इन अमूल्य संसाधनों को भावी पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखने का संदेश देता है। हम सबको ध्यान रखना है कि वन महोत्सव मात्र राजकीय कार्यक्रम न होकर जन–जन का कार्यक्रम बने ताकि प्रदेश में निर्धारित मानकों के अनुरूप वनावरण व वृक्षावरण सृजित करने का लक्ष्य प्राप्त करने में हम सफल हो सकें।

(रेणुका कुमार)